# निराला के काव्य में मानव मुक्ति की चेतना

**डा0 जय प्रकाश यादव**
एसो0 प्रोफेसर,
हिन्दी विभाग,
मुलतानीमल मोदी (पी.जी.) कॉलेज,
मोदीनगर, गाजियाबाद (उ0प्र0)

**सारांश**

स्वाधीनता का आशय उस स्वतन्त्र भाव से है जिसमें व्यक्ति या समाज अपनी गुलामी की बेड़ियों को तोड़कर मुक्त हो जाना चाहता है। कोई भी लोकतांत्रिक राष्ट्र अपने नागरिकों को वह सभी अधिकार प्रदान करता है जिसमें उसके स्वच्छन्द विचरण व चिन्तन की स्वतन्त्रता होती है। औपनिवेशिक भारत में स्वाधीनता का यह भाव संभव नहीं था। इसीलिए स्वाधीनता पूर्व के रचनाकारों में राष्ट्र की मुक्ति का स्वर व्यापक रूप से सुनाई पड़ता है। कविताओं में स्वाधीनता का यह स्वर मनुष्य की गहरी पीड़ा एवं वेदना के साथ प्रस्तुत है। निराला की कविताएं स्वाधीनता की उस पीड़ा को व्यक्त करती हैं जहाँ सामाजिक विसंगतियाँ विकराल रूप धारण करती जा रही है। वह साम्राज्यवाद व सामांतवाद से मुक्ति के साथ-साथ किसान, मजदूर, नारी व शूद्र की मुक्ति की बात करते हैं। निराला मनुष्य की स्वाधीन चेतना के कवि हैं। वह मात्र राजनीतिक स्वतन्त्रता ही नहीं चाहते बल्कि वह आम जन की सामाजिक, सांस्कृतिक व आर्थिक स्वतन्त्रता भी चाहते हैं।

स्वाधीनता की चेतना निराला के कविता की महत्वपूर्ण मर्म है। निराला की प्रगतिशील दृष्टि एवं समाजवादी चिन्तन उन्हें किसान-मजदूर की समस्याओं से जोड़ता है। निराला मानते है कि मनुष्यों की मुक्ति की तरह कविता की भी मुक्ति आवश्यक है। मनुष्य कर्मों के बन्धन से छुटकारा पाकर मुक्त हो सकता है और कविता छन्दों के अनुशासन से मुक्त होकर। निराला सामाजिक रूढ़ियों के बन्धन को

तोड़ देना चाहते हैं। निराला के काव्य का मुख्य प्राण मानव मुक्ति की गहरी आकांक्षा है। वह अंग्रेजी साम्राज्यवाद के साथ-साथ भारत की सामाजिक-संास्कृतिक रूढ़ियों से भी मुक्ति चाहते हैं। वह स्वर के साथ शब्द, भाव और छन्द तीनों' की मुक्ति की बात करते हैं। निराला मानते हैं कि -"मनुष्य को हर प्रकार की परतन्त्रता से मुक्ति तभी मिल सकती है जब वह अपनी परतन्त्रता के स्वरूप को पहचाने।"1 निराला यथास्थितिवादी नहीं हैं। वह परिवर्तन चाहते हैं जो नयापन लिए हो-'प्रिय स्वतन्त्रत्रव, अमृत-मंत्र नव भारत में भर दे।'

निराला मानते हैं कि 'जब तक स्त्रियों में नवीन जीवन की स्फूर्ति भर नहीं जाएगी तब तक गुलामी का नाश नहीं हो सकता।' रूढ़ियों का कोई धर्म नहीं होता। वे सामाजिक श्रंृखलाओं का रूप धारण कर जंजीरों का रूप धारण कर लेती हैं। इनको तोड़ना मुक्ति के लिए आवश्यक है। -'बादल राग' कविता में कवि कहता है 'ऐ निर्बन्ध/ अन्ध-तप-अगम-अनर्गल-बादल। ऐ स्वछन्द! मंद-चंचल-समीर-रथ पर उच्श्रृंखल! ऐ उद्दाम! अपार कामनाओं के प्राण! बाधा रहित विराट'। 'जागो फिर एक बार' कविता में मानव मुक्ति की आंकाक्षा इस प्रकार व्यक्त है- 'मुक्त हो सदा ही तुम/बाधा विहीन बन्ध छन्द ज्यों'।

वर्ण, धर्म, जाति के भेदभाव से प्रेम परे होता है। 'प्रेयसी' में निराला लिखते हैं- 'दोनो हम भिन्न वर्ण/भिन्न जाति, मित्ररूप/भिन्न धर्म भाव पर/केवल अपनाव से, प्राणों से एक थे'। निराला मुक्ति की खोज में प्रकृति में जाते हैं। प्रकृति का परिवेश सामाजिक विषमताओं से आजाद है। प्रकृति भी स्वाधीनता की प्रेरणा देती है। 'पंचवटी प्रसंग' में सीता राजभवन की अपेक्षा चित्रकूट में अधिक स्वतन्त्रता महसूस करती हैं- 'मैं तो सोचती हूँ, वहाँ वंदिनी थी/और यहाँ खेलती हूँ मुक्त खेल'। 'तुलसीदास' में भी कवि कहता है- 'इस जग के मग के मुक्त प्राण/गाओ विहंग! सद्ध्वनित गान'। 'परिमल' में वह कहते हैं- 'आज हो गए ढ़ीले सारे बन्धन, मुक्त हो गए प्राण'। 'अनामिका' में घर की स्त्री को पत्थर की कारा को तोड़कर गंगाजल की धारा की तरह प्रवाहित होने का आह्वान करते हैं- 'तोड़ो, तोड़ो, तोड़ो-कारा/पत्थर की, निकलो फिर, गंगाजल धारा'। निराला एक नये मुक्ति संग्राम के आकांक्षी हैं। 'बेला' में वह लिखते हैं-

'जल्द जल्द पैर बढ़ाओ, आओ, आओ!

आज अमीरों की हवेली
किसानों की होगी पाठशाला
धोबी, पासी, चमार, तेली
खोलेंगे अंधेरे को ताला।'

वह सभी पिछड़ी-दलित जातियो को एक जुटता का समाजवादी संदेश देते हैं कि सारी सम्पत्ति देश की हो। 'अनामिका' में 'वह तोड़ती पत्थर' कविता में निराला एक मजदूरनी के जीवन संघर्ष को बयाँ करते हैं- 'वह तोड़ती पत्थर, देखा मैंने उसे इलाहाबाद के पथ पर/वह तोड़ती पत्थर'। किसान, जमींदार के आतंक एवं शोषण से पीड़ित हैं। अपनी कमजोर स्थिति के कारण किसान जमींदारों के विरूद्ध संघर्ष करने में असमर्थ हैं। कवि निराला अपनी मुक्ति की अवधारण को और स्पष्ट करते हैं-

'सारी सम्पत्ति देश की हो
सारी आपत्ति देश की बने
जनता जातीय देश की हो।
बाद से विवाद यह ठने
काँटा काँटे से कढ़ाओ।'

निराला शासक वर्ग की तीखी आलोचना करते हैं'। 'कुकुरमुत्ता' कविता द्वारा निराला यथार्थवाद की ओर बढ़ते हुए तत्कालीन परिस्थितियों पर व्यंग्य करते हैं। वह पूंजीवादी व्यवस्था की आलोचना करते हुए लिखते हंै-

"अबे सुन बे गुलाब
भूल मत जो पायी खुशबू रंगो आब
खून चूसा खाद का तून अशिष्ट
डाल पर इतराता है कैपटलिस्ट
कितनों को तूने बनाया है गुलाम
शाहों, राजों, अमीरों, का रहा प्यारा।"2

निराला जातीय श्रेष्ठता का तिरस्कार करते हैं। वह उत्तर भारत के सर्वश्रेष्ठ ब्राहमण कान्यकुब्ज के पाखण्ड का उपहास करते हुए कहते हैं-

'ये कान्य कुब्ज कुल कुलांगार

खाकर पत्तल में करें छेद'।

निराला मानते है राष्ट्र की मुक्ति दलित व वंचितों की मुक्ति से ही संभव है। आगे देश का भविष्य इन्हीं से है-

'गाँव के अधिक जन कुली या किसान हैं
कुछ पुराने परजे जैसे धोबी, तेली, बढ़ई,
नाई, लोहार, तारी, तरकिहार, चुड़िहार,
बेहना, कुम्हार, डोम, कूदूरी, पासी चमार हैं।'

निराला ने अपने काव्य में ऐसे पात्रों का सृजन किया है जो शोषकों से मुक्ति के लिए छटपटा रहे हैं। निराला का काव्य वस्तुतः किसी भी सामाजिक पराधीनता का प्रतिरोध करता है। उनका मानना है कि स्वाधीनता ज्ञान से ही संभव है। इसीलिए वह अपनी कविताओं में बराबर जनजागरण की बात करते हैं। उन्हें विश्वास है की एक दिन पश्चिम की गुलामी से लोग जरूर मुक्त हो जायेगे-

'जितने विचार आज!
मारते तरंग है
साम्राज्यवाद की भोगवासना में
नष्ट होंगे चिरकाल के लिए
आएगी भारत के भाल पर गई ज्योति
हिन्दुस्तान मुक्त होगा घोर अपमान से
दासता के पाश कट जाएंगे।'

निराला का संघर्ष जनता की प्रगति और मुक्ति के लिए है। इसीलिए वह रूढ़ियों को चुनौती देते हुए धार्मिक कट्टरता से लड़ते हैं। वह साम्राज्यवाद का विरोध करते हुए विश्व मानवतावाद को स्वीकार करते हैं। वह स्त्री, दलित, पिछड़े सभी की मुक्ति की बात करते हैं। वह भारत के सांस्कृति अधःपतन को अच्छी तरह जानते हैं। इसीलिए भारत के सांस्कृतिक सूर्य के उदय की बात भी करते हैं। निराला के यहाँ मंहगू, चतुरी चमार, झींगुर जैसे दलित पात्र उपेक्षित समाज की चिन्ता को व्यक्त करते हंै। निराला के उपेक्षित पात्र अपने अधिकारों एवं सम्मान के लिए लड़ रहे हैं। वे गोल बन्द हो रहे हैं। निराला के यहाँ स्वाधीनता या मुक्ति के कई अर्थ हैं। वह सामाजिक शोषण के साथ-साथ औपनिवेशिक शोषण के विरोधी हैं। उनके लिए

राष्ट्र बहुत महत्वपूर्ण है। 'भारती जय विजय करे', 'अरूण यह मधुमय देश हमारा,', 'हिमाद्रि तुंग श्रृंग से प्रबुद्ध शुद्ध भारती,' जैसी कविताएं राष्ट्रीय चेतना की कविताएं हैं जहाँ पराधीनता बोध झलकता है तथा उससे मुक्ति की आकांक्षा भी।

आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने लिखा है "बहु वस्तु स्पर्शिनी प्रतिभा निराला जी में है।"3 समाज में फैले ढोंग को उन्होंने बहुत नजदीक से देखा। शुक्लजी ने हिन्दी साहित्य के इतिहास में लिखा कि "जिस प्रकार निराला जी को छन्द के बन्धन अरूचिकर है उसी प्रकार सामाजिक बन्धन भी।"4 निराला पुरानी व्यवस्था को बदलकर नयी एवं सुख देने वाली व्यवस्था की कामना करते हैं। नामवर सिंह ठीक कहते हैं कि निराला हिन्दी के उन कवियों में से है जिनमें हिन्दी की समूची परम्परा बोलती है। उर्दू और हिन्दी की परम्परा से निराला का अपना अनुभव जुड़कर कविता का जीवन सत्य प्रकट होता है।

रामविलास शर्मा के लिए निराला हिन्दी साहित्य के 'कबीर' हैं तथा पाश्चात्य साहित्य के 'शेक्सपियर'। निराला के जीवन में वह सब घटित होता है जो शेक्सपियर के नाटकों में वर्णित है। रामविलास शर्मा 'निराला की साहित्य साधना' में लिखते हैं कि "हिन्दी जाति की अतुलशक्ति और अन्तविर्रोध के प्रतीक निराला थे। उन जैसा साहित्यकार इस प्रदेश में न पहले कभी हुआ था, न संभवतः आगे कभी होगा"।5 निराला ने औपनिवेशिक अर्थनीति को समझकर भारत की सांस्कृतिक व राजनीतिक उन्नति का रास्ता बनाया। निराला के साम्राज्य विरोधी चिन्तन का प्रस्फुटन उनकी कविताओं में प्रमुख रूप से हुआ। निराला समाज के कमजोर एवं पीड़ित वर्ग के साथ खड़े थे। रामविलास शर्मा 'निराला की साहित्य साधना' भाग दो में लिखते हैं कि "निराला ने अपना ध्यान केन्द्रित किया समाज के उस वर्ग पर जिसे दासता से सबसे अधिक कष्ट था, भारत के उन किसानांे पर जो सोलहों आने विवश थे। इसमे भी सबसे दलित, निर्धन, भूमिहीन जमींदार का बेगार करने वाले किसान थे, उनके प्रति निराला की सहानुभूति ज्यादा थी।"6 निराला ने समाज की विषमता को मिटाने के लिए चल रहे आन्दोलनांे का समर्थन भी किया।

निराला का व्यक्तित्व छायावाद की सीमाओं का अतिक्रमण कर प्रगतिवाद की भावभूमि तैयार करता है। वह समाज व जीवन के लिए ऐसा प्रतिमान रचते हैं जो मानव मुक्ति की कामनाओं से प्रेरित है। 'बादल राग' में वह किसान मन

से किसानों की पक्षधरता व्यक्त करते हैं-

'जीर्ण बाहु है शीर्ण शरीर,
तुझे बुलाता कृषक अधीर
ऐ विप्लव के वीर!'

किसान आज भी अपनी वर्तमान स्थिति से सन्तुष्ट नहीं हैं। उनके अन्दर आक्रोश एवं प्रतिरोध की चेतना लगाातार बढती जो रही है। वे लगातार अपने उत्पीड़न एवं शोषण के विरूद्ध आवाज उठा रहे हैं तथा अपने अधिकारों के लिए आन्दोलित हैं।

निराला प्रबल सामाजिक चेतना के कवि हैं। इनकी कविता मानव मुक्ति के महान उद्देश्य से प्रेरित है। निराला का काव्य साहित्य एवं समाज में नवजागरण का प्रतीक है। निराला के जीवन कर्म एवं रचना कर्म में भेद नहीं हैं इसलिए उनका काव्य कालजयी काव्य है। वे सामाजिक सांस्कृति विसंगतियों पर निर्मम प्रहार करते हैं तथा अपने अधिकारों से वंचित, शोषित जन के साथ खड़े होते हैं। वह समाज की क्रूरता एवं स्वार्थ को पहचानते हैं इसीलिए मुक्त कंठ से मानव मुक्ति का जयघोष करते हैं।

**सन्दर्भ ग्रन्थ**


1. *नन्दकिशोर नवल- निराला रचनावली भाग-6 पृ0 293*
2. *निराला संचयन- लोकभारती प्रकाशन इलाहाबाद, सन् 2017, पृ0 22*
3. *रामचन्द्र शुक्ल-हिन्दी साहित्य का इतिहास, लोकभारती प्रकाशन इलाहाबाद सन् 2013 पृ0, 488*
4. *रामचन्द्र शुक्ल-हिन्दी साहित्य का इतिहास, लोकभारती प्रकाशन इलाहाबाद सन् 2013 पृ0, 488*
5. *रामविलास शर्मा निराला की साहित्य साधना, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, सन् 2002, पृ0 491*
6. *रामविलास शर्मा- निराला की साहित्य साधना, भाग-2 राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, सन् 2016 पृ0 14*

***सहायक वेबसाईट-***

1. *http:/kavitakosh.org/nirala*
2. *www.hindi kavita.com*